Date- 2-04-2020

शिक्षा के मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य (1)

Ques वृद्धि एवं विकास को परिभाषित कीजिए। वृद्धि एवं विकास को परिश्रम प्रभावित करने वाले कारक कौन-2 से है। विवेचना कीजिए।

Ans

वृद्धि

वृद्धि का अर्थ :- वृद्धि का अर्थ सामान्य तौर पर मानव के शरीर के विभिन्न अंगो के विकास और अंगो की कार्य करने की क्षमता माना जाता है। अंगो को इस विकास के परिणाम को कार्य करने की क्षमता माना जाता है। अंगो के इस विकास के परिणामस्वरूप उसका व्यवहार भी किसी न किसी रूप से प्रभावित होता है अतः इस प्रकार

वृद्धि का अर्थ - शरीर की वृद्धि

फ्रेंक के अनुसार - "शरीर के किसी विशेष पक्ष में जो परिवर्तन होता है, उसे वृद्धि कहते है।"

हारलॉक के अनुसार - "अभिवृद्धि से आशय प्राणी का आकार रंग संरचना में परिवर्तन है"

वृद्धि की प्रकृति को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है :-

1. वृद्धि से व्यक्ति बड़ा और भारी होता है।
2. वृद्धि को मात्रात्मक माना जा सकता है।
3. वृद्धि की सामान्य पद्धति होती है, अर्थात अलग-2 व्यक्तियों में अलग-अलग।
4. शारीरिक वृद्धि को देखना मानसिक वृद्धि की अपेक्षा सरल होता है।
5. शिशुकाल में वृद्धि पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियों कम गति से होती है।

विकास

विकास का अर्थ :- (परिपक्वता (Maturity)) की ओर अग्रसर करता है, अर्थात विकास परिपक्वता की एक प्रक्रिया है, वास्तव मे विकास शब्द का प्रयोग सभी प्रकार के परिवर्तनों के लिए प्रयुक्त होता है जिससे कार्य कुशलता और व्यवहार मे प्रगति हो। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वृद्धि की अपेक्षा विकास की संकल्पना व्यापक होती है। यानि विकास के अर्थ मे वृद्धि शामिल होती है।

वृद्धि मात्रात्मक परिवर्तनों की ओर इशारा करती है, तो विकास गुणात्मक परिवर्तन को और सामान्यतः वृद्धि व विकास की प्रक्रिया साथ-2 चलती है।

परिभाषाएँ :-

लाबार्बा के अनुसार - "विकास का अर्थ है परिपक्वता से संबंधित परिवर्तनों से है जो मानव के जीवन के समय २ के साथ घटित होते रहते है"

हरलॉक के अनुसार -" मानव विकास की और अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित किया है उनके अनुसार विकास अभिवृद्धि तक सीमित नही है, अपितु इसमें परिवर्तनों का वह प्रगतिशील क्रम निहित है जो परिवर्तनों को लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है। विकास के परिणामस्वरूप व्यक्ति मे नवीन विशेषताएँ और नवीन योग्यताएँ प्रकट होती है।"

विकास

- भावात्मक
- शारीरिक
- मानसिक

विकास की विशेषताएँ :-

1. विकास एक प्रगतिशील प्रक्रिया है।
2. विकास एक परिपक्वता उन्मुख प्रक्रिया है।
3. विकास को वातावरण एवं वंशानुक्रम दोनो प्रभावित करते है।
4. विकास एक सतत एवं क्रमिक प्रक्रिया है, इसमें प्रत्येक अवस्था स्वयं की पूर्व अवस्था से किसी न किसी माध्यम से जुड़ी रहती है।
5. विभिन्न अवस्थाओं मे विकास की दर भिन्न होती है।

H.V. Meredith : एच. वी. मेरेडिथ ने वृद्धि और विकास के पाँच प्रमाण बताए है -

1. (आकार (Size))
2. (संख्या (Number))
3. (प्रकार (Kind))
4. (स्थिति (Position))
5. (सापेक्षिक आकार / Relative Position)

वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

1 व्यक्तिगत विभिन्नता :- सभी बालकों की सीखने, समझने की क्षमता अलग-2 होती है।

Date:
Page:

विकासात्मक प्रगति मे व्यक्तिगत विभिन्नता देखी जाती है। तीव्र बुद्धि के बच्चों का बौद्धिक विकास तीव्र गति से तथा मंदबुद्धि बच्चों का मंद गति से होता है।

2. **पोषण :-** बालक के सामान्य विकास के लिए उपयुक्त पालन- पोषण तथा पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है। सभी परिवारो मे समान रूप से बालकों पर ध्यान नही दिया जाता है, कि उसमें स्वास्थ्य के लिए आवश्यक चीजे है या नही। शारीरिक विकास के लिए आयोडीन कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, कैल्शियम तथा विटामिन आदि बहुत आवश्यक है।

3. **वातावरण :-** वातावरण भी बालक के विकास को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण तत्व है। वातावरण के प्रभाव स्वरूप व्यक्ति मे अनेक विशेषताओ का विकास होता है। शैशावस्था से ही सभी प्रकार के विकास पर वातावरण जिस मे बालक रहता है प्रभाव पड़ता है।

4. **वंशानुक्रम :-** वंशानुगत कारक जन्मजात विशेषताएँ होती है जो बालक के अंदर जन्म से ही पायी जाती है। वैज्ञानिको ने यह स्पष्ट किया है कि जो गर्भधान के समय स्त्री- पुरुष के जिस प्रकार के शरीर सम्बन्धी पित्रैक का संयोग होता है बच्चो का विकास भी उसी आधार पर होता है।

व्यक्ति का चारित्रिक विकास भी उसके वंशानुक्रम पर निर्भर करता है। इसका अध्ययन डगडेल ने चरित्रहीन ड्यूक के वंश के अध्ययन के आधार पर किया

Date:
Page:

वृद्धि एवं विकास में अंतर :-

वृद्धि	विकास
1. वृद्धि का अर्थ शारीरिक परिवर्तन से है	विकास का अर्थ गुणात्मक परिवर्तनों से है।
2. वृद्धि को विकास से संकुचित माना जाता है।	विकास को व्यापक माना जाता है क्योंकि वृद्धि की अवधारणा विकास का ही भाग है।
3. वृद्धि लगातार नहीं चलती बल्कि शिशुकाल मे तीव्र गति से और उसके बाद धीमी हो जाती है।	विकास की प्रक्रिया लगातार चलती रहती है। वह रुकती नहीं है।
4. वृद्धि मे होने वाले परिवर्तनो को सामान्य रूप से जीवन मे देखा जा सकता है।	विकास को सामान्यतः देखा नहीं जा सकता है। क्योंकि व्यक्ति के जीवन मे यह अप्रत्यक्ष रूप से रहता है।
5. वृद्धि को हम माप सकते है	विकास को सामान्यतः मापना कठिन है।

Affixes change the meaning of the base word or the root word